

रविवार 21 जून, 2020

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठ: मत्ती 23 : 9

"और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।"

उत्तरदायी अध्ययन: प्रेरितों के काम 17 : 22-28

- 22 तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा; हे अथेने के लोगों मैं देखता हूं, कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो।
- 23 क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि अनजाने ईश्वर के लिये। सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।
- 24 जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।
- 25 न किसी वस्तु का प्रयोजन रखकर मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है।
- 26 उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियां सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है।
- 27 कि वे परमेश्वर को ढूंढ़ें, कदाचित उसे टटोल कर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं!
- 28 क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश भी हैं।

पाठ उपदेश

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

बाइबल

1. अय्यूब 33 : 4

4 मुझे ईश्वर की आत्मा ने बनाया है, और सर्वशक्तिमान की सांस से मुझे जीवन मिलता है।

2. यशायाह 44 : 23, 24

23 हे आकाश, ऊंचे स्वर से गा, क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है; हे पृथ्वी के गहिरे स्थानों, जयजयकार करो; हे पहाड़ों, हे वन, हे वन के सब वृक्षों, गला खोल कर ऊंचे स्वर से गाओ! क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल में महिमावान होगा॥

24 यहोवा, तेरा उद्धारकर्ता, जो तुझे गर्भ ही से बनाता आया है, यों कहता है, मैं यहोवा ही सब का बनाने वाला हूँ जिसने अकेले ही आकाश को ताना और पृथ्वी को अपनी ही शक्ति से फैलाया है।

3. यशायाह 45: 2, 3, 12, 13 (सेः)

2 मैं तेरे आगे आगे चलूंगा और ऊंची ऊंची भूमि को चौरस करूंगा, मैं पीतल के किवाड़ों को तोड़ डालूंगा और लोहे के बेड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दूंगा।

3 मैं तुझ को अन्धकार में छिपा हुआ और गुप्त स्थानों में गड़ा हुआ धन दूंगा, जिस से तू जाने कि मैं इस्राएल का परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे नाम ले कर बुलाता है।

12 मैं ही ने पृथ्वी को बनाया और उसके ऊपर मनुष्यों को सृजा है; मैं ने अपने ही हाथों से आकाश को ताना और उसके सारे गणों को आज्ञा दी है।

13 मैं ही ने उस पुरूष को धार्मिकता से उभारा है और मैं उसके सब मार्गों को सीधा करूंगा॥

4. उत्पत्ति 16: 1 (सेः)

1 अब्राहम की पत्नी सारै के कोई सन्तान न थी।

5. उत्पत्ति 17 : 1, 2, 5, 6, 15-17, 19, 21 (मेरे)

1 जब अब्राहम निन्नानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूँ; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा।

2 और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा।

5 सो अब से तेरा नाम अब्राहम न रहेगा परन्तु तेरा नाम इब्राहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है।

- 6 और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे।
- 15 फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा।
- 16 और मैं उसको आशीष दूंगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूंगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूंगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे।
- 17 तब इब्राहीम मुंह के बल गिर पड़ा और हंसा, और अपने मन ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरूष के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी?
- 19 तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना: और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बान्धूंगा जो उसके पश्चात उसके वंश के लिये युग युग की वाचा होगी।
- 21 ... मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बान्धूंगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा।

6. उत्पत्ति 21 : 1-3, 5

- 1 सो यहोवा ने जैसा कहा था वैसा ही सारा की सुधि लेके उसके साथ अपने वचन के अनुसार किया।
- 2 सो सारा को इब्राहीम से गर्भवती हो कर उसके बुढ़ापे में उसी नियुक्त समय पर जो परमेश्वर ने उससे ठहराया था एक पुत्र उत्पन्न हुआ।
- 3 और इब्राहीम ने अपने पुत्र का नाम जो सारा से उत्पन्न हुआ था इसहाक रखा।
- 5 और जब इब्राहीम का पुत्र इसहाक उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ वर्ष का था।

7. अय्यूब 38 : 3-7, 31, 32

- 3 पुरुष की नाई अपनी कमर बान्ध ले, क्योंकि मैं तुझ से प्रश्न करता हूँ, और तू मुझे उत्तर दे।
- 4 जब मैं ने पृथ्वी की नेव डाली, तब तू कहां था? यदि तू समझदार हो तो उत्तर दे।
- 5 उसकी नाप किस ने ठहराई, क्या तू जानता है उस पर किस ने सूत खींचा?
- 6 उसकी नेव कौन सी वस्तु पर रखी गई, वा किस ने उसके कोने का पत्थर बिठाया,
- 7 जब कि भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जयजयकार करते थे?
- 31 क्या तू कचपचिया का गुच्छा गूंथ सकता वा मृगशिरा के बन्धन खोल सकता है?
- 32 क्या तू राशियों को ठीक ठीक समय पर उदय कर सकता, वा सप्तर्षि को साथियों समेत लिए चल सकता है?

8. अय्यूब 37 : 16, 17, 23

- 16 क्या तू घटाओं का तौलना, वा सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है?

- 17 जब पृथ्वी पर दक्खिनी हवा ही के कारण से सन्नाटा रहता है तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं?
23 सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता।

9. मरकुस 3 : 7 (यीशु), 8

- 7 और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया: और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।
8 और यहूदिया, और यरूशलेम और इद्रूमिया से, और यरदन के पार, और सूर और सैदा के आसपास से एक बड़ी भीड़ यह सुनकर, कि वह कैसे अचम्भे के काम करता है, उसके पास आई।

10. मरकुस 4 : 35-41

- 35 उसी दिन जब सांझ हुई, तो उस ने उन से कहा; आओ, हम पार चलें,।
36 और वे भीड़ को छोड़कर जैसा वह था, वैसा ही उसे नाव पर साथ ले चले; और उसके साथ, और भी नावें थीं।
37 तब बड़ी आन्धी आई, और लहरें नाव पर यहां तक लगीं, कि वह अब पानी से भरी जाती थी।
38 और वह आप पिछले भाग में गद्दी पर सो रहा था; तब उन्होंने उसे जगाकर उस से कहा; हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं, कि हम नाश हुए जाते हैं?
39 तब उस ने उठकर आन्धी को डांटा, और पानी से कहा; “शान्त रह, थम जा”: और आन्धी थम गई और बड़ा चैन हो गया।
40 और उन से कहा; तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?
41 और वे बहुत ही डर गए और आपस में बोले; यह कौन है, कि आन्धी और पानी भी उस की आज्ञा मानते हैं?

11. आमोस 5 : 1 (शब्द से), 8

- 1 ... हेइस्त्राएल के घराने...:
8 जो कचपचिया और मृगशिरा का बनाने वाला है, जो घोर अन्धकार को भोर का प्रकाश बनाता है, जो दिन को अन्धकार कर के रात बना देता है, और समुद्र का जल स्थल के ऊपर बहा देता है, उसका नाम यहोवा है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 516 : 9-23

ईश्वर सभी चीजों का, उसकी अपनी समानता पर पक्षपात करता है। जीवन अस्तित्व में परिलक्षित होता है, सत्यता में सत्य, अच्छाई में ईश्वर, जो अपनी शांति और स्थायित्व प्रदान करता है। निःस्वार्थ भाव से प्यार, सुंदरता और रोशनी में नहाया हुआ। हमारे पैरों के नीचे की घास चुपचाप बहती है, "नम्र पृथ्वी का वारिस होगा।" मामूली अर्बेटस उसकी प्यारी साँस को स्वर्ग भेज देता है। महान चट्टान छाया और आश्रय देती है। चर्च-गुंबद से सूरज की रोशनी, जेल-सेल में झलकती है, बीमार-कक्ष में घूमती है, फूल को रोशन करती है, परिदृश्य को सुशोभित करती है, पृथ्वी को आशीर्वाद देती है। मनुष्य, उसकी समानता में बना, उसके पास सभी पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रभुत्व को दर्शाता है। भगवान के साथ सहवास और शाश्वत के रूप में आदमी और औरत हमेशा के लिए, अनंत पिता-माता भगवान की महिमा में परिलक्षित होते हैं।

2. 509 : 16-28

ईश्वर ब्रह्मांड को बनाते और बनाते हैं। आध्यात्मिक समझ का प्रकाश केवल अनंत की झलक देता है, यहाँ तक कि नेबुलो भी अंतरिक्ष की अपरिपक्वता को दर्शाता है। तथाकथित खनिज, सब्जी, और पशु पदार्थ अब समय या सामग्री संरचना से अधिक आकस्मिक नहीं हैं, जब वे "सुबह के सितारे एक साथ गाते थे।" मन ने पृथ्वी में होने से पहले "खेत का पौधा" बनाया। आध्यात्मिक स्वर्गारोहण के काल मन की रचना के दिन और मौसम हैं, जिसमें सौंदर्य, उदात्तता, पवित्रता, और पवित्रता - हाँ, दैवीय प्रकृति - मनुष्य में प्रकट होती है और ब्रह्मांड कभी गायब नहीं होता है।

3. 295 : 6-8

ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है।

4. 332 : 4 (माता पिता)-8

पिता-माता देवता का नाम है, जो उनकी आध्यात्मिक रचना के उनके कोमल संबंधों को इंगित करता है। जैसा कि प्रेरित ने इसे उन शब्दों में व्यक्त किया है जो उसने एक क्लासिक कवि से मंजूर होने के साथ उद्धृत किए थे: "क्योंकि हम भी उसकी संतान हैं।"

5. 257 : 12-21

मन विचारों में अपनी समानता बनाता है, और एक विचार का पदार्थ गैर-बुद्धिमान पदार्थ के कथित पदार्थ होने से बहुत दूर है। इसलिए पिता मन पदार्थ का पिता नहीं है। भौतिक इंद्रियां और मानव अवधारणाएं आध्यात्मिक

विचारों को भौतिक विश्वासों में अनुवादित करेंगी, और कहेंगे कि मानव सिद्धांत, अनंत सिद्धांत के बजाय, ईश्वर, दूसरे शब्दों में, दिव्य प्रेम, - बारिश का जनक है, "जो बूंदों की भीख मांगता है ओस, "जो अपने मौसम में मजाज़रोथ को आगे लाता है," और अपने बेटों के साथ "आर्कटुरस" का मार्गदर्शन करता है।

6. 547 : 25-32

मनुष्य सहित ब्रह्मांड का सही सिद्धांत भौतिक इतिहास में नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास में है। प्रेरित विचार ब्रह्मांड की एक सामग्री, कामुक, और नश्वर सिद्धांत को त्यागता है, और आध्यात्मिक और अमरता को अपनाता है।

यह पवित्रशास्त्र की आध्यात्मिक धारणा है, जो मानवता को बीमारी और मृत्यु से बचाती है और विश्वास को प्रेरित करती है।

7. 119 : 1-18

जब हम अस्पष्ट आध्यात्मिक शक्ति के साथ बात करते हैं, - जब हम अपने सिद्धांतों में ऐसा करते हैं, तो निश्चित रूप से हम वास्तव में इस बात का समर्थन नहीं कर सकते हैं कि यह क्या है और क्या नहीं कर सकता है, - हम सर्वशक्तिमान को भंग कर देते हैं, ऐसे सिद्धांतों के लिए नेतृत्व करते हैं दो चीजों की। वे या तो मामले के आत्म-विकास और स्व-सरकार को देखते हैं, या फिर वे मानते हैं कि मामला आत्मा का उत्पाद है। इस दुविधा के पहले सींग को जब्त करने और पदार्थ को स्वयं की शक्ति के रूप में विचार करने के लिए, अपने स्वयं के ब्रह्मांड से निर्माता को छोड़ना है; दुविधा के दूसरे सींग को समझकर और ईश्वर को पदार्थ का निर्माता मानते हुए, न केवल उसे सभी आपदाओं, भौतिक और नैतिक के लिए जिम्मेदार बनाना है, बल्कि उसे अपने स्रोत के रूप में घोषित करना है, इस प्रकार, उसे प्राकृतिक कानून के नाम से और फार्म में सदाचारी कुशासन बनाए रखने का दोषी माना जाता है।

एक अर्थ में ईश्वर प्रकृति के समान है, लेकिन यह प्रकृति आध्यात्मिक है और पदार्थ में व्यक्त नहीं है।

8. 171 : 12-16

मनुष्य सहित ब्रह्मांड पर मन का नियंत्रण अब एक खुला प्रश्न नहीं है, बल्कि विज्ञान है। यीशु ने बीमारी और पाप को ठीक करने और मृत्यु की नींव को नष्ट करके दिव्य सिद्धांत और अमर मन की शक्ति का वर्णन किया।

9. 151 : 23-24

वह दिव्य मन जिसने मनुष्य को बनाया, वह अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है।

10. 134 : 26-30

यीशु ने कहा: "मुझे पता था कि तू मुझे हमेशा सुनता है," और उस ने मरे हुआओं में से लाजर को जीवित कर दिया, तूफान को रोक दिया, बीमारों को चंगा किया, पानी पर चला गया। भौतिक प्रतिरोध पर आध्यात्मिक शक्ति की श्रेष्ठता में विश्वास करने का दिव्य अधिकार है।

11. 124 : 14-31

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

आसंजन, सामंजस्य और आकर्षण मन के गुण हैं। वे दिव्य सिद्धांत से संबंधित हैं, और उस विचार-शक्ति के उपसंहार का समर्थन करते हैं, जिसने पृथ्वी को अपनी कक्षा में लॉन्च किया और गर्व की लहर से कहा, "यहां तक और इसके आगे नहीं।"

आत्मा सभी चीजों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है। हम ताकतों पर चलते हैं। उन्हें वापस ले लें, और सृजन को ढह जाना चाहिए। मानव ज्ञान उन्हें पदार्थ की ताकत कहता है; लेकिन दिव्य विज्ञान घोषित करता है कि वे पूर्ण रूप से दिव्य मन से संबंधित हैं, इस दिमाग में निहित हैं, और इसलिए उन्हें उनके सही घर और वर्गीकरण के लिए पुनर्स्थापित करता है।

12. 121 : 24-32

सूर्य केंद्रीय शांति है, जहां तक हमारे सौर मंडल का संबंध है, और पृथ्वी सूर्य के बारे में एक वर्ष में एक बार घूमती है, इसके अलावा अपनी धुरी पर दैनिक रूप से घूमती है।

जैसा कि संकेत दिया गया है, खगोलीय आदेश ईश्वरीय सिद्धांत की कार्रवाई का अनुकरण करता है; और ब्रह्मांड, भगवान का प्रतिबिंब, इस प्रकार आध्यात्मिक तथ्य को निकट लाया जाता है, और ईश्वरीय विज्ञान से संबद्ध है जैसा कि ब्रह्मांड की चिरस्थायी सरकार में प्रदर्शित होता है।

13. 503 : 9-17

दिव्य सिद्धांत और विचार आध्यात्मिक सद्भाव का गठन करते हैं, - स्वर्ग और अनंत काल। सत्य के ब्रह्मांड में, मामला अज्ञात है। त्रुटि का कोई भी दबाव वहां प्रवेश नहीं करता है। ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। इसलिए अनन्त आश्चर्य, - कि अनंत अंतरिक्ष अनगिनत आध्यात्मिक रूपों में उसे दर्शाते हुए, ईश्वर के विचारों से अभिभूत है।

14. 331 : 16-17

भगवान के ब्रह्मांड में सब कुछ उसे व्यक्त करता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्व्याणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के

लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6